Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

पर्यटनः भाषा और साहित्य
(मध्यप्रदेश की जीवन रेखा 'नर्मदा' के विशेष संदर्भ में)

सुरेश सरोठिया*

शोध सार (Abstract)

'इत चंबल उत बेतवा, मालव सीमा सुजान।

दक्षिण दिसि है, नर्मदा, यह पूरी पहचान।।''

अमरकंटक में नर्मदा एंव सोन नदी के उद्गम स्थल, कपिल धारा जलप्रपात, दुग्ध धारा, कबीर चौरा, माई की बगिया, नर्मदा मंदिर, कल चुरीकला के मच्छेद्रनाथ और पातालेश्वर मंदिर, केन्द्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय प्रमुख स्थान हैं। अमरकंटक अनूपपुर जिले की पुष्पराजगढ़ तहसील में है तथा यह मैकल पर्वतमाला के मध्य स्थित हैं एवं नर्मदा और सोन नदियों का उद्गम स्थल है और इतिहास के अनुसार यह चेदिवंश और कलचुरियों के अधीन रहा है और नर्मदा को मेकलसुता, शांकरी और रेवा नामों से भी जाना जाता है।

मध्यप्रदेश की प्रसिद्ध नदियों में प्रमुख नर्मदा नदी काउद्गम स्थल अमरकंटक धार्मिक स्थल है। यह अनूपपुर जिले के पुष्पराजगढ़ तहसील के दक्षिण–पूर्वी भाग में मैकल पर्वतमाला के मध्य स्थित है। यहीं से नर्मदा और सोन नदियों का उद्गम हुआ है। यह स्थल आदिकाल से ही ऋषि मुनियों की तपोभूमि रही है । प्राकृतिक सौंदर्य के लिए यह स्थल प्रसिद्ध है। यहां के वनों में सागौन, सरई, साल, बीजा, महुआ, लाख, चिरौंजी, तेंदूपत्ता, गोंद ओर अनेक वनोषधियां पाई जाती है। यह स्थल अपने में अनेक लोकमान्यताओं और दंतकथाओ को समेटे हुए है । झरनों, प्रपातों और कुण्डों का जल तन–मन को शीतलता प्रदान करता है।

चिर कुमारी नर्मदा जो अमरकंटक से भड़ौच तक प्रवाहित होती है इसकी परिक्रमा की जाती है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम करते हुए इस नदी की पूजा की जाती है। संध्या आरती तो जगह–जगह देखने को मिलती है, जो एक उदाहरण के रूप में है । नर्मदा परिक्रमावासी जगह–जगह मंदिरों में रूकते हुए इनकी पूजा अर्चना करते हैं। प्राचीन साहित्य में उल्लेख मिलता है कि यहां कपिल मुनि और मार्कण्डेय ऋषि के आश्रम थे। बाद में यह क्षेत्र विराट राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

*शोधार्थी, पीएच.डी. हिन्दी–विभाग, माता जीजाबाई शा. स्ना. कन्या महा. वि. इंदौर, म.प्र.।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

यहां लोग कहते है कि अज्ञातवास के समय पांडव अमरकंटक आये थे। भारतीय इतिहास के विद्वानों का मत है कि कुछ समय तक यहां चेदिवंश का और बाद में दसवीं–ग्यारहवीं शती ई. में यह क्षेत्र कलचुरियों के अधीन था।

रीवा के कल्चुरि राज परिवार से बांधवगढ़ सहित यह क्षेत्र बघेल शासकों के पास हो गया। 1808 ई. तक यह नागपुर के भोंसलों के आधिपत्य में रहा और फिर उनसे अंग्रेजों के अधिकार में आया।

अमरकंटक एवं आसपास के पर्यटकों और शोधार्थियों के लिए यहां नर्मदा का उद्गम स्थल, अमरकंटक के मंदिर समूह, कपिलधारा का जलप्रपात, सोन नदी का उद्गम, कबीरचौरा, माई की बगिया आदि स्थल हैं जहां लोग भ्रमण कर सकते हैं। अमरकंटक में जनजातीय विश्वविद्यालय भी अभी हाल में खोला गया हैं।

नर्मदा का उद्गम

अमरकंटक पर्वत पर नर्मदा कुण्ड हैं। पुराणों में नर्मदा के जन्म के कई वर्णन मिलते है। नर्मदा पुराण में इनके बारें में विस्तार से व्याख्या की गई है। कुछ विद्वानों ने अमरकंटक को अमरकंट भी कहा है जो शिव का नाम हो सकता है। नर्मदा को मेकलसुता और शांकरी के नाम से भी जाना जाता है।

पर्वतों और पहाड़ियों में अपनी चंचल प्रवाह मानता के कारण वह रेवा भी कहलाती है। नर्मदा की उत्पत्ति के बारें में एक कथा प्रचलित है कि जब सृष्टि कर्ता ब्रह्मा की आंखों से दो आंसू अमरकंटक पर गिरे तो दो नदियां प्रवाहित हुई जिसमें एक नर्मदा और दूसरी सोन नदी। यह दोनों एक ही उद्गम से निकलने के बावजूद अलग–अलग दिशाओं में बहती है। नर्मदा पश्चिम की ओर बहती हुई भड़ौच के पास अरबसागर में मिलती है जबकि सोनबिहार की ओर प्रवाहित होकर गंगा में जा मिलती है।

अमरकंटक के मंदिर

यहां कुल मिलाकर 28 मंदिर है। यहीं नर्मदा मंदिर में प्राचीन नर्मदा माई की मूर्ति प्रतिस्थापित की गई है, उसी के सामने दूसरे मंदिर में सती की प्रतिमा विराजमान है। यह स्थान पुराण कथा में सती के देहत्याग की स्मृति से भी जुड़ा हुआ है।

नर्मदाकुण्ड के आसपास के मंदिर श्रद्धालु भक्तों के लिए पवित्र स्थल हैं। यहां शिवजी का त्रिमुखी मंदिर भी है, जिसका शिखर कल्चुरीकालीन मंदिर जैसा है, इसे कल्चुरी शासक राजा कर्णदेव (1042–1142 ई.) द्वारा बनवाया गया। यह यहां का सबसे प्राचीन मंदिर है, इनके अतिरिक्त और भी कई मंदिर है, इनमें मच्छेंद्रनाथ और पातालेश्वर मंदिर कलचुरी कला के उत्तम उदाहरण हैं।

- नर्मदा पश्चिम की ओर बहती हुई भड़ौच के पास अरबसागर में मिलती है।
- सोन नदी बिहार की ओर प्रवाहित हो कर गंगा में मिलती है।
- मेगस्थनीज ने भी हिरण्याह नाम से सोन नदी का वर्णन किया है।
- यहाँ कबीरचौरा कबीरपंथी सम्प्रदाय का पवित्र स्थल है।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

कपिलधारा जलप्रपात

यह जलप्रपात नर्मदा के उद्गम स्थल से 6 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह कहा जाता है कि कभी यहीं अमरकंटक नगरी थी। यहां नर्मदा 100 फुट गहरे खड्ड में गिरती है, दुर्गम चट्टानों से होकर एक मार्ग भी जलप्रपात के निचले हिस्से तक जाता है। पहाड़ के नीचे उतरकर इसके सम्पूर्ण दर्शन किए जा सकते है। दर्शनप्रपात के चारों ओर खड़े होकर इस नैसर्गिक सौंदर्य का आनंद लेते हैं। कुछ दूर चल कर ही दुग्ध धारा नामक स्थान है। यहां से नर्मदा की पतली जलधारा दुर्गम पहाड़ियों ओर वनों में खो–सी जाती है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्यमन को लुभाता हैं।

सेनमुंग

यह सोन नदी का उदगम स्थल माना जाता है। अमरकंटक पर्वत से सोन की पतली धारा एक दलदली प्रदेश से निकलकर वनखड़ी में अदृश्य हो जाती है। सोन नदी का वर्णन प्राचीन साहित्यों में मिलता है। मेगस्थनीज ने भी इसका वर्णन हिरण्याह नाम से किया है। इसकी जलधारा में सोने के कण मिलने के कारण ही इसका नाम सोन पड़ा। इसका उल्लेख ब्रह्मपुराण, वाल्मीकी रामायण और भागवत पुराण में मिलता है। यह एक कहावत यहां मिलती है कि सोन का विवाह नर्मदा से निश्चित हुआ किन्तु सोन के किसी और स्त्री के साथ प्रेम संबंधों का जब नर्मदा को पता चल गया तो उसने ब्याह करने से इंकार कर दिया फिर वह विपरीत दिशा में बह निकली।

इसके अतिरिक्त माई की बगिया और कबीरचौरा भी दर्शनीय स्थल है। कबीरचौरा कबीरपंथी सम्प्रदाय का एक पवित्र स्थल है। यहां भृगुकमण्डल और पुष्करबाधा भी देखने योग्य है।

अमरकंटक के आसपास के पुरातत्वीय स्थलों मे अन्तरों एक प्रमख कल्चुरीकालीन स्थल है जहां के मंदिर अवशेष तथा योगिनी मूर्तियां घुवेला संग्रहालय में प्रदर्शित की गई है।

अमरकंटक के नदियों के उद्गमस्थल, प्राकृतिकसौंदर्य के साथ पुरातत्वीय धरोहर यहां आनेवाले शोधार्थियों एवं पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह एक पवित्र धार्मिक नगरी के रूप में प्रसिद्ध है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश की जीवन रेखा का साहित्य की दृष्टि से विशेष महत्व है। पर्यटनस्थल के साथ–साथ इसे कक्षाओं में पाठ्यक्रम के रूप में भी शामिल किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. भारतीय भाषाएँ: ग्रियर्सन पृ. 78–80.
[2]. मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य लोकतात्विक अध्ययनः डॉ. सत्येन्द्र, पृ. 205-207.
[3]. इंटरनेटः https:/hi.m.wikipedia.org>wiki>मधु
[4]. भारत के देशी राज्यः सुख सम्पत्ति रामभंडारी पृष्ठ कं 199.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.